IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)
बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 3 July-September, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.22022857
ISSN : 3048-6971

जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्य: शिल्प आ सामाजिक दृष्टि

डॉ. राम नरेश राय
सहायक प्राध्यापक
ललित नारायण मिश्र स्मारक महाविद्यालय, बीरपुर (सुपौल)

सारांश-

मैथिली साहित्यक आधुनिक गद्य-परंपरामे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। हुनक लेखनक जड़ि ग्रामीण जीवनमे गड़ल अछि आ ई ग्रामीण पृष्ठभूमिसँ शुरू होइत जीवनक विभिन्न आयामकेँ छुबैत, समाजक अनेकानेक रूपक उद्घाटन करैत अछि। किसान, मजदूर आ स्त्री जीवनक पीड़ा, संघर्ष आ विडम्बना हुनक रचनामे प्रामाणिक ढंगसँ प्रतिबिम्बित होइत अछि। 1947 ईस्वीसँ आरम्भ भेल हुनक जीवनयात्रा खेती-बारीक कठिन श्रम आ सामाजिक असमानतासँ गुजरैत साहित्यक ठोस आधारमे परिणत भेल।

मण्डलजीक भाषा-शिल्पक विशेषता ई अछि जे ओ लोकजीवनसँ जुड़ल शब्दावली आ अभिव्यक्तिकेँ अपन साहित्यक केन्द्र बनौलनि। हुनक रचनाकेँ रचना-शैलीक दृष्टिसँ जीवित दस्तावेज मानल जाइत अछि। प्रतीकात्मक प्रयोग हुनक साहित्यकेँ गहींर बनबैत अछि। 'पंगु' उपन्यासमे खेत, पोखर, धार आ नदी केवल प्राकृतिक चित्र नहि, बल्कि धैर्य, सामूहिकता आ संघर्षक प्रतीक बनि जाइत अछि। एहि प्रतीकात्मकतासँ समाजक असमानता, असुरक्षा आ आशाक निरन्तर प्रवाहक उद्घाटन होइत अछि।

व्यंग्य मण्डलजीक लेखनक प्रमुख शक्ति अछि। 'रत्नाकर डकैत' आ 'मिथिलाक बेटी' जकाँ नाटकसभमे ओ हास्यक आवरणक भीतरसँ सामाजिक विडम्बना, प्रशासनिक पाखंड आ जीवनक विसंगति उजागर करैत छथि। हुनक संवाद-शिल्प सरल आ विश्वसनीय अछि, जे पात्रक मानसिकता, आचरण आ सामाजिक यथार्थक प्रामाणिक उद्घाटन करैत अछि।

भावनात्मकता सेहो हुनक साहित्यक महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। 'बोनिहारिन मरनी', 'बड़की बहिन' आ 'सुखाइत जीवनमे नब कलश' जकाँ कृतिसभमे स्त्री पात्रक संघर्ष निजी स्तरसँ आगाँ बढ़िकऽ व्यापक सामाजिक पीड़ा आ विडम्बनाक प्रतीक बनि जाइत अछि।

सार रूपेँ, जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्य मनोरंजन मात्र नहि अछि जे ताहि संग सामाजिक यथार्थ आ चेतनाक दस्तावेज सेहो अछि। लोकभाषा, प्रतीक, व्यंग्य, संवाद आ संवेदनशील अभिव्यक्तिक संगमसँ ओ मैथिली गद्य-साहित्यक आधुनिक प्रवाहकेँ नवीन दिशा दैत छथि। हुनक लेखन अकादमिक शोध लेल गंभीर आधार प्रस्तुत करैत अछि आ सामान्य पाठक लेल आत्मीय अनुभवक रूपमे उभरैत अछि।

मैथिली साहित्यक आधुनिक गद्य-परंपरामे जगदीश प्रसाद मण्डलक योगदान अद्वितीय मानल जाइत अछि। मण्डलजी किसान-जीवनक धरातलसँ उद्भूत ओहन रचनाकार छथि, जे अपन लेखनीक माध्यमसँ मिथिलाक समाज, संस्कृति आ संघर्षक प्रामाणिक चित्रण करैत छथि। 1947 ई.मे आरम्भ भेल मण्डलजीक जीवन-यात्रा अपन कर्मठता, इमानदारी आ लगनक बलसँ खेती-बारीक कठिन श्रम, ग्रामीण विडम्बना आ किसान-मजदूरक संघर्षक अनुभूतिसँ गढ़ल ठोस रूप धारण कएलक। हुनक कथा, उपन्यास आ नाटकसभ केवल मनोरंजनक साधन नहि, बल्कि सामाजिक आत्ममंथन आ सामूहिक चेतनाक दर्पण बनि मैथिली साहित्य-जगतमे उभरि चुकल अछि।

मण्डलजीक भाषाशिल्प आ शैलीगत प्रयोगक विशेषता ई अछि जे ओ मैथिली भाषाकेँ मात्र साहित्यिक अभिव्यक्तिक औपचारिक सीमा धरि नहि राखलनि, बल्कि ओकरा ग्राम्य जीवनक प्राणधारासँ जोड़ि देलनि। ओहि कारणेँ हुनक रचनासभमे लोक-बिंब, ग्रामीण मुहावरा, व्यंग्यात्मक शब्दावली आ प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति एकसंग प्रस्फुटित भऽ उठैत अछि। एहि संयोजनसँ साहित्य केवल कलात्मक संरचना नहि रहि जाइत अछि, बल्कि लोकजीवनक जीवित दस्तावेजक रूप ग्रहण कएलक अछि।

साहित्यशास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे 'शिल्प' एक व्यापक आ बहुस्तरीय अवधारणा थिक। सामान्य अर्थमे ई शब्द कथ्यक प्रस्तुति करबाक विधि, रचनाक ढाँचा, शैलीक संयोजन आ सौंदर्यात्मक विन्यासक पर्याय मानल जाइत अछि। मुदा शिल्प मात्र भाषिक अलंकरण वा सजावट नहि, अपितु सम्पूर्ण रचनात्मक योजना, अनुशासन आ पाठक-प्रभावक संगठित प्रणाली होइत अछि। रचनामे शिल्प रचनाकारक सौंदर्यबोध, यथार्थ-दृष्टि आ प्रयोगशीलताक उद्घाटन करैत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यक सन्दर्भमे शिल्पक विमर्श केवल कलात्मक उपकरणक मूल्याङ्कन धरि सीमित नहि अछि। हुनक शिल्प सामाजिक चेतना, भावनात्मक आवेग आ वैचारिक विमर्शक वाहक सेहो अछि। कथा-पात्रक भाषा, व्यवहार आ संवादक प्रस्तुति हुनक शिल्पक उत्कृष्टताकेँ स्पष्ट करैत अछि, जे पात्रक जीवंतता आ कथ्यक प्रामाणिकताकेँ प्रमाणित करैत अछि।

शिल्प रचनाकेँ संवेदनशील आ बहुआयामी बनबैत अछि। ई पाठकक भावनाकेँ झकझोरैत अछि, चेतनाक स्तरपर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि आ सामाजिक यथार्थक नब दृष्टि प्रदान करैत अछि। एहि दृष्टिसँ मण्डलजीक शिल्प केवल साहित्यिक सौंदर्यक आयाम नहि, बल्कि समाजक आत्मानुभूत आ सांस्कृतिक चेतनाक गूंज सेहो अछि। हुनक लेखन मैथिली गद्यक आधुनिक प्रवाहकेँ गति प्रदान करैत अछि आ एहन परंपरा स्थापित करैत अछि जे आजुक समयमे सेहो ओतबे प्रासंगिक आ प्रेरणास्पद जे साहित्य क्षेत्रमे सभदिनसँ रहल अछि।

भाषाशिल्प-

1. ग्रामीण लोकभाषा आ जनजीवनसँ जुड़ल मुहावरा: मण्डलजीक भाषा-शिल्पक एक प्रमुख विशेषता ई अछि जे ओ गाम-घरमे प्रचलित बोली, कहावत आ लोक-प्रयोगक साहित्यिक रूपांतरण करैत छथि। हुनक कथा-उपन्यास सभमे किसानक दुख, मजदूरक परिश्रम, नारीक पीड़ा आ गामक जिनगी अपन प्रामाणिक स्वरमे सजीव भऽ उठैत अछि।

'मोड़पर' उपन्यासक उदाहरण: एहि उपन्यासमे मण्डलजी ग्रामीण मुहावराकेँ कथा-प्रवाहमे स्वाभाविक रूपेँ रखैत छथि- "तोहर भाग्य मोटका कलमसँ लिखल छह ते महींका बात केना बुझबहक।"[i]

ई कहावत सामाजिक संरचना आ परिवारक आर्थिक स्थितिकेँ भाग्यसँ जोड़ि दैत अछि। सम्पन्न परिवार लेल 'मोटका कलम' आ विपन्न लेल 'महींका कलम', ई तुलना वर्गीय विभाजनक यथार्थ उजागर करैत अछि।

ओही उपन्यासमे दोसर ठाम मण्डलजी लोकजीवनक अनिश्चिततापर प्रकाश दैत छथि- "कहलो जाइ छै, 'उढ़ड़ाकेँ गामक ठेकान!' अखनो आबि सकै छैथ आ दू घन्टाक पछातियो आबि सकै छैथ।"[ii]

ई मुहावरा मिथिला समाजक लोकअनुभवसँ उपजल अछि। 'उढ़ड़ा', अर्थात् घुमन्तू, जकर कोनो स्थिर ठेकाना नहि। एहि प्रतीकसँ समाजक ओहि स्थिति स्पष्ट होइत अछि जतए जीवनक निश्चितता नहि, केवल अनिश्चितता आ प्रतीक्षा रहि जाइत अछि।

निष्कर्षत: कहल जा सकैछ जे जगदीश प्रसाद मण्डलक भाषा-शिल्पक प्रमुख शक्ति ग्रामीण लोकभाषा आ जनजीवनसँ उपजल मुहावरा, कहावत आ लोकोक्ति सभक साहित्यिक प्रयोगमे देखाइत अछि। ओ गाम-घरमे प्रचलित बोलीक सहजताकेँ कथा-प्रवाहमे एहन ढंगसँ गढ़ैत छथि जे ई मात्र भाषिक सौंदर्य नहि रहि जाइत अछि, बल्कि समाजक यथार्थक गहींर अभिव्यक्ति बनि जाइत अछि।

'मोड़पर' उपन्यासक उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे मुहावराक प्रयोग रंजकता भरबाक साधन मात्र नहि, अपितु वर्गीय विभाजन, भाग्यक असमानता आ जीवनक अनिश्चितताकेँ उजागर करबाक प्रभावी माध्यम बनैत अछि। 'मोटका कलम' आ 'महींका कलम' जकाँ कहावत समाजक आर्थिक विषमताकेँ सहज किन्तु तीक्ष्ण रूपमे उद्घाटित करैत अछि, जखनकि "उढ़ड़ाकेँ गामक ठेकान" जकाँ लोकानुभव जीवनक अस्थिरता आ प्रतीक्षाक प्रतीक बनि जाइत अछि।

एहि आधारपर ई निष्कर्ष निकलैत अछि जे मण्डलजीक भाषाशिल्प लोकजीवनक प्रामाणिक संवेदनाकेँ साहित्यक धरातलपर उतारैत अछि। ओ ग्रामीण बोलीक आत्माकेँ बचबैत ओकरा समाजक संघर्ष आ यथार्थक सजीव दर्पण बना दैत छथि, जे हुनक कथा-उपन्यासक सभसँ पैघ विशेषता अछि।

2. प्रतीकात्मकता आ लोक-बिंब: जगदीश प्रसाद मण्डल लोक-बिंबक अत्यन्त कुशल साधक छथि। हुनक रचनामे वृक्ष, नदी, पोखरि आ खेत-खरिहॉन मात्र दृश्य-पट नहि, बल्कि किसानी जीवनक विविध पक्षक प्रामाणिक रूप भेटैत अछि। गामक आम लोकक जीवन-संघर्ष, जीविकोपार्जन आ पशुपालन, यथा गाय, भैंस आ बकड़ीसँ जुड़ल दैनंदिन दिनचर्या, हिनकर साहित्यक सहज अभिव्यक्ति बनि जाइत अछि। ई चित्रण मात्र बाहरी रूपक सजावट नहि, अपितु सामाजिक पीड़ा, विडम्बना आ संघर्षक गहींर प्रतीक बनिकए उभरैत अछि। खेत जोतैत बड़द, लगहरि गाय-भैंस आ आँगनमे बान्हल बकड़ी-पठरू सभ श्रमशील समाजक धैर्य आ जीवनयापनक आधारक प्रतीक रूपमे प्रकट होइत अछि। मण्डलजी लोक-बिंबसभक माध्यमसँ एहन सजीवता पैदा करैत छथि जे पाठक एकहि बेर प्राकृतिक जीवनक सहजता आ सामाजिक विडम्बनाक तीव्र अनुभूति करैत अछि। परिणामस्वरूप, हुनक साहित्य आम समाजक यथार्थक एकदम प्रमाणिक आ विश्वसनीय चित्र पाठकक सामने प्रस्तुत करैत अछि।

'पंगु' उपन्यासक उदाहरण- सीतापुर गामक विस्तृत चित्रणमे खेत-पथार, धार, पोखरि, चौरी, फल-फूल आ माछ-काछु सभ केवल प्राकृतिक संपदा नहि, बल्कि समाजक शक्ति, दुर्बलता, सम्पन्नता आ असमानता सभक प्रतीक रूपेँ देखाइत अछि।

"भूमिक तँ ई गुण छइहे जे कुइयाँ-इनारक रूपमे जहिना पतालसँ पानि अबैए तहिना खेत-पथार अकास पानिकेँ सेहो संचित करिते अछि।"[iii]

ई पाँति धरतीक जीवनदायिनी शक्ति मात्र नहि, अपितु समाजक सहनशीलता आ धैर्यक प्रतीक सेहो अछि। धरती जहिना सभकेँ पोषित करैत अछि, तहिना समाज अपन धैर्य आ कर्मसँ अपन अस्तित्वकेँ बचबैत अछि।

ओहि वर्णनमे 'चौमसिया धार' आ 'छअमसुआ धार' जीवनक प्रवाहक प्रतीक अछि। चौमसिया धार तात्कालिक सम्पन्नता आ अल्पकालीन राहतक सूचक अछि, जखनकि छअमसुआ धार दीर्घकालीन संघर्ष आ सहनशीलताक प्रतीक बनि जाइत अछि।

गामक 'अठारह गण्डा पोखैर' आ अन्य पनिझाउक उल्लेख मात्र जलस्रोतक संकेत नहि, बल्कि सामूहिकता, सहकारिता आ जीवनक निरन्तरताकेँ सूचित करैत अछि। पोखरि आ चौरीक पानि जहिना खेती-पशुपालन आ लोकजीवनक आधार बनैत अछि, तहिना ई समाजक स्थायित्व आ जीवन-दायिनी चेतनाक प्रतीक बनि जाइत अछि।

एक दिस नदीक सजीवता जीवनक आधार बनैत अछि, दोसर दिस कोसी आ कमलाक उग्र प्रवाहक भय गामक अस्तित्वपर संकटमे धकेलैत रहैत अछि। ई प्रतीक सामाजिक असुरक्षा, राजनीतिक अस्थिरता आ विपरीतक चेतनाकेँ व्यक्त करैत अछि।

निष्कर्षत: कहल जा सकैछ जे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे प्रतीकात्मकता आ लोक-बिंब मात्र सजावटक साधन नहि, अपितु समाजक सामूहिक चेतना, पीड़ा आ संघर्षक गहींर अभिव्यक्ति बनि जाइत अछि। वृक्ष, नदी, पोखरि, खेत-पथार आ धार सभक चित्रण जीवनक बहुआयामी यथार्थकेँ रूपायित करैत अछि। कखनो ई जीवनदायिनी शक्ति रूपेँ देखाइत अछि, तँ कखनो असुरक्षा आ संकटक प्रतीक सेहो बनि जाइत अछि।

'पंगु' उपन्यासमे सीतापुर गामक भूगोल आ प्राकृतिक परिदृश्यक वर्णन प्रतीकात्मक प्रयोगक माध्यमसँ समाजक

समूचा स्वरूप उघारि दैत अछि। खेत आ धरतीक सहनशीलता, पोखरिक सामूहिकता, धारक प्रवाह आ नदीक उग्रता सभ मिलिकए जीवनक संघर्ष, असमानता, असुरक्षा आ आशाक निरन्तर स्रोतक प्रतीक बनि जाइत अछि।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे मण्डलजीक प्रतीकात्मकता सामाजिक विडम्बना आ जनजीवनक गहींर परतसभकेँ उद्घाटित करबाक कलात्मक साधन अछि। ओ लोक-बिंबकेँ ग्राम्य जीवनसँ जोड़िकए साहित्यक यथार्थवादक सशक्त आधार तैयार करैत छथि, जतए पाठककेँ केवल प्राकृतिक सौंदर्य नहि, बल्कि समाजक आत्मा आ संघर्षक धड़कनक अनुभव होइत अछि।

3. व्यंग्यात्मक शब्दावली आ सहज अभिव्यक्ति: मण्डलजी व्यंग्यक धारक प्रखर प्रयोग करैत छथि। हुनक व्यंग्य महज हास्य नहि, अपितु समाजक खोखलापनक उद्घाटन अछि। रत्नाकर डकैत, वा झमेलिया बिआह नाटक आकि तामक तमघैल एकांकीमे व्यंग्यात्मक शब्दावली पाठककेँ हँसेबो करैत अछि आ सोचए लेल बाध्य सेहो करैत अछि। हुनक भाषा सरल, सहज आ जनजीवनक बोलचालसँ प्रेरित अछि, जे कथा-परिस्थितिक प्रत्यक्ष अनुभव बनि जाइत अछि।

उदाहरणस्वरूप रत्नाकर डकैत नाटकमे बर्बरी पात्रक संवाद देखल जा सकैत अछि: “पहिने एकटा बात कहि दएह जे केकरो हाइ-ब्लड-पेसर होइ छै आ केकरो लो-ब्लड-पेसर होइ छै, दुनूक एक्के कारण हेतइ। तोरे सनक पट्टा पेटबला ने एक्के कहतै।”[iv]

एहि तरहक व्यंग्यात्मक वाक्य नाटकक हास्य-रसकेँ जीवन्त बनबैत अछि, मुदा ओहि हास्यक भीतर समाजक दैनंदिन व्याधि, अत्यधिक भोजन, रोग-व्याधि आ असंयमित जीवनशैलीपर तीक्ष्ण चोट सेहो करैत अछि।

एहिपर, रत्नाकरक टिप्पणी: “देखू विचार दू ढंगे लोक करैए, औपचारिक आ अनौपचारिक। ओना, अनौपचारियो औपचारी बनैए मुदा बीचमे शासकीय सूत्र आबि जाइत अछि।”[v]

एहि संवाद प्रशासनक जटिल आ विडंबनापूर्ण स्वरूपपर व्यंग्यात्मक प्रहार करैत अछि। समाजक औपचारिकता आ पाखंडक जे चित्रण एतय भेटैत अछि, ओ पाठककेँ सहज हास्यसँ हटिकऽ गहन सोचमे निमंत्रित करैत अछि।

बर्बरीक लगातार टोका-चाली आ गणेशक प्रत्युत्तर: “जेकरा बीत भरिक हाथ-पएर छै मुदा पट्टा सन पेट आ हाथी सन मुँह रखने अछि...।”[vi]

एहि भाषिक संरचना व्यंग्यक लोकधर्मी स्वरूपक उदाहरण अछि, जतए पात्रक बातचीत जनजीवनक बोलीमे तीक्ष्ण रूप लैत अछि।

अन्ततः रत्नाकर डकैत नाटकक एहि व्यंग्यात्मक शब्दावली समाजक यथार्थकेँ सहज अभिव्यक्ति दैत अछि। ई व्यंग्य मात्र हँसी उत्पन्न करबाक साधन नहि, बल्कि मिथिला समाजक विसंगति, निरर्थक मूल्य आ पाखंडक निडर उद्घाटनक रूपमे उभरैत अछि।

4. कथा-शैली, नाटकीय शैली आ वर्णन-शैली: मण्डलजीक कथा-शैली ग्रामीण यथार्थवादसँ भरल अछि। कथा, उपन्यास, नाटक आ एकांकीसभमे हुनक लेखन-शैली अद्भुत ढंगसँ विकसित भेल अछि। कथानक अपन सहज गतिसँ यथार्थक संग आगू बढ़ैत अछि आ घटनाक्रम समाजक सामूहिक जीवनसँ गुँथल रहैत अछि।

कथा-संग्रहक उदाहरण: गामक जिनगी- गामक जिनगी कथा संग्रह मण्डलजीक वर्णन-शैलीक सजीव नमूना अछि। ओ गामक दृश्य-चित्रण एहन करैत छथि जे लोक-बिंब पाठकक आँखि आगू सजीव भऽ उठैत अछि। द्रष्टव्य अछि- “गोल-गोल हरिअर-हरिअर भुआ जकाँ सोहरी लागल डारिमे, जेहने हरिअर पात तेहने फड़, यएह छी पीरारक फड़। पाँचेटा पुरान गाछ गाममे, बड़का-बड़का आम, जामुन आ शिशो गाछक जन्म ओ पाँचो पीरारक गाछ देखने।”[vii]

ई अंश प्रकृतिक सुंदरता मात्र नहि, अपितु गामक इतिहास, पीढ़ीगत स्मृति आ लोक-संस्कृतिक अंतरतम गवाही प्रस्तुत करैत अछि।

उपन्यासक उदाहरण: जिनगीक जीत- जिनगीक जीत उपन्यासमे कथा-शैली प्रवाहपूर्ण संवाद आ आंतरिक एकालापक संग विकसित होइत अछि। पात्रक जीवनक सहज चित्रण समाजक संघर्षशील यथार्थकेँ रेखांकित करैत अछि। द्रष्टव्य अछि- "दरद असान होइते मखनी बाजल- दरद असान भेल जाइए। मुँहपर हाथ नेने अछेलाल मने-मन सोचैत जे असगरूआ छी केना पल्हैनक ऐठाम जाएब? केना अगियासी जोड़ब? जाड़क समय छिऐ। परसौती-ले जाड़ ओहने दुश्मन होइए जेहने बकरी-ले फौती।"[viii]

ई दृश्य ग्रामीण जीवनक कठिनाइ, प्रसव पीड़ा आ पारिवारिक सहयोगक संवेदनशील चित्रण करैत अछि।

नाटकक उदाहरण: मिथिलाक बेटी- नाटकीय शैलीमे मण्डलजी सामाजिक समस्या आ यथार्थक तीव्र उद्घाटन करैत छथि। मिथिलाक बेटी नाटकमे मूल्यवृद्धि आ आम जनक कठिनाइक मार्मिक अभिव्यक्ति भेटैत अछि। "जे दूधक डिब्बा बीस रुपैआमे कीनै छेलौं, आइ अट्ठाइस रुपैआमे देलक... सभ चीजक दाम अकास ठेकल जाइए। तहूमे नोकरिया जिनगी, सभ चीज पाइये हाथे हएत।"[ix]

ई संवाद आम जनतापर महँगाइक सीधा असर आ आर्थिक असमानतापर व्यंग्यात्मक चोटक स्पष्ट उदाहरण अछि।

एकांकीक उदाहरण: कल्याणी- कल्याणी एकांकी नारी अस्मिता आ सामाजिक दृष्टिकोणक तीव्र टकरावक चित्र प्रस्तुत करैत अछि- "निर्लज पुरुख नारीक लाज (इज्जत) थोड़े बुझैए। उ सभ तँ नारीकेँ खेलौना बनौने अछि। एक्के पुरुख अपन बहु-बेटीकेँ इज्जतक नजैरिये देखैए मुदा दोसराकेँ रण्डी-बेश्या बुझैए।"[x]

एहि अंश नारी-जीवनक अपमानक विरुद्ध स्त्रीक विद्रोह आ चेतनाक प्रखर स्वरूप अछि।

मण्डलजीक कथा-शैली, नाटकीय शैली आ वर्णन-शैली सभ विधामे अपन अलग-अलग स्वरूपमे प्रकट होइत अछि। गामक जिनगीक लोक-बिंब गामक सांस्कृतिक धरातलकेँ उघारैत अछि। जिनगीक जीत उपन्यास पारिवारिक संघर्ष आ ग्रामीण पीड़ाकेँ गाढ़ संवेदनासँ चित्रित करैत अछि। मिथिलाक बेटी नाटक समकालीन सामाजिक-आर्थिक विडंबनाक व्यंग्यात्मक उद्घाटन करैत अछि, जखनकि कल्याणी एकांकी स्त्री अस्मिता आ पुरुषप्रधान समाजक दोहरापनपर तीव्र प्रहार करैत अछि।

ई चारू उदाहरण मण्डलजीक साहित्यक विविधता, शैलीगत परिपक्वता आ समाजक यथार्थसँ अथाह जुड़ावक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि।

5. संवाद-शिल्प आ कथोपकथनक प्रवाह: जगदीश प्रसाद मण्डल संवादक सशक्त शिल्पी छथि। हुनक कथा आ उपन्याससभमे संवाद मात्र घटनाक्रमकेँ आगू बढ़ाबए लेल नहि प्रयुक्त होइत अछि, बल्कि समाजक अमीट सच्चाइ आ पात्रक मनोविज्ञानक उद्घाटन सेहो करैत अछि। संवादक प्राकृतिकता, सहजता आ क्षेत्रीय बोलीक घनिष्ठता एकर प्रमुख विशेषता अछि। एहि कारणेँ मण्डलजीक संवाद-पद्धति साहित्यक यथार्थवादकेँ नवीन ऊँचाइ दैत अछि।

जिनगीक जीत उपन्यासक संवाद एहि शैलीक सजीव उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। पल्हनि आ अच्छेलालक वार्तालाप द्रष्टव्य अछि: "हम नइ जेबैन। डगरक सिदहा हमर बाँकीए अछि। पेट-बान्हि केते दिन काज करबैन।"[xi]

एहि पाँतिमे ग्रामीण गरीबक विवशता, श्रमक निरंतरता आ असुरक्षित भविष्यक गहींर पीड़ा व्यक्त भऽ रहल अछि। कथोपकथनक स्वरूप इएह रहैत अछि जे पात्रक सामाजिक स्थिति, आर्थिक बाध्यता आ जीवन-दर्शन एकहि वाक्यमे उद्घाटित भऽ जाइत अछि।

जीवन-मरण उपन्यासक संवाद वैचारिक आ सामाजिक टकरावकेँ सोझामे आनैत अछि। डॉक्टर देवनन्दन आ शीला बीचक बातचीत गामक सामाजिक अपेक्षा, परम्परा आ सामूहिक जिम्मेदारीक उद्घाटन करैत अछि:

"माए, आइ तँ समाजक काज पड़त। केते परिवारसँ बाबूकेँ दोस्ती छेलैन?"

"जखन गाम पहुँचब तँ बाबूकेँ जरबैले तँ लोक सभकेँ कहए पड़त किने?"[xii]

एहि संवादक भीतर एकटा तीव्र द्वंद्व अछि, व्यक्तिगत इच्छा आ सामाजिक जिम्मेदारीक बीच। बेटाक प्रश्न आधुनिक दृष्टिकोणकेँ दर्शाबैत अछि, मुदा लगले पछाति सुभद्राक उत्तर समाजक परम्परागत मूल्य आ सामूहिक संस्कृतिपर प्रकाश डालैत अछि: “छिया, छिया। मिथिलाक समाज छी। ऐ समाजमे मुरदा जरबैले, केकरो घरक आगि मिझबैले, केकरो साँप-ताँप कटने रहल आकि गाछ-ताछपरसँ खसल रहल तेकर जिगेसा करैले, केकरो कियो कहै नइ छइ। ई सामाजिक काज छी, तँए अपन काज बुझि सभ अपने तैयार भऽ जाइत अछि।”[xiii]

ई अंश संवादक माध्यमसँ समाजक सामूहिकता आ मानवीय दायित्वक बोध प्रस्तुत करैत अछि। खास बात ई अछि जे संवाद उपदेशात्मक स्वर नहि लैत अछि, बल्कि पात्रक सहज अभिव्यक्तिमे अनन्त सामाजिक सच्चाइ उद्भासित होइत अछि।

मण्डलजीक संवाद-शिल्पक आलोचनात्मक मूल्यांकन करैत कहल जा सकैत अछि जे ओ संवादकेँ कथा-शिल्पक केन्द्रीय अवयव बना देलनि। ई संवादसभ पात्रक चरित्र-निर्माणमे, कथानकक प्रगतिमे आ समाजक अन्तर्विरोधक उद्घाटनमे समान रूपसँ योगदान दैत अछि। ग्रामीण बोलीक टोन, सहज शब्दावली आ ठाढ़ प्रश्न-उत्तर संवादकेँ जीवन्त, विश्वसनीय आ सशक्त बनबैत अछि।

6. भावात्मकता आ सामाजिक यथार्थक प्रस्तुति: जगदीश प्रसाद मण्डलजीक भावात्मकता सदैव सामाजिक यथार्थक धरातलपर टिकल अछि। हुनक कथा आ उपन्यासमे संवेदना व्यक्तिगत आभास नहि, बल्कि सामूहिक जीवनक अनुभवक प्रतिफलन बनि जाइत अछि। बहिन- कथा, बड़की बहिन- उपन्यास आ सुखाइत जीवनमे नब कलश सदृश रचनासभमे नायिका सभक आंतरिक पीड़ा, सामाजिक बंधन आ स्वाभिमानक संघर्ष अत्यंत मार्मिक ढंगसँ चित्रित भेल अछि। एहि कथासभमे स्त्री-पात्रक भावनात्मक संघर्ष मात्र निजी स्तरपर सीमित नहि रहि जाइत अछि, बल्कि पूरा समाजक विसंगति आ विडंबनाक दर्पण बनि उठैत अछि।

प्रयोगक प्रभाव-

पात्रक सजीवता: संवाद, क्षेत्रीय बोली आ व्यवहारक यथार्थतासँ मण्डलजीक पात्रसभ जीवित बनि उठैत अछि। हिनक एक-एक रचनाक अवलोकन करवाकाल पाठककेँ लागैत अछि जे ओ वास्तविक जीवनक व्यक्तिसभक संग साक्षात्कार कऽ रहल अछि।

सामाजिक यथार्थक उद्घाटन: मण्डलजी व्यंग्य आ लोकभाषा केर प्रयोगसँ समाजक विषमता, शोषण आ अन्यायक तीव्र उद्घाटन करैत छथि। ओहिकेँ कारण हुनक रचना-संसार केवल साहित्यिक कल्पना नहि, अपितु समाजक प्रत्यक्ष साक्ष्य बनि जाइत अछि।

पाठकपर प्रभाव: सामान्य पाठकसँ लैत अकादमिक शोधकर्ता तक, सभ गोटे हुनक लेखनसँ प्रभावित होइत अछि। हुनक रचनाशक्ति सीधा हृदयपर चोट करैत अछि आ सामाजिक चेतना जागृत करैत अछि।

मैथिली गद्य-परंपरामे योगदान: मण्डलजी मैथिली भाषाकेँ ग्राम्य जीवनक धरातलसँ उठाकऽ साहित्यक शिखर तक पहुँचा देलनि। हुनक लेखन मैथिली गद्यकेँ आधुनिक चेतना, सामाजिक दृष्टि आ यथार्थवादी प्रवृत्तिसँ प्रासंगिक बनौलनि।

सार रूपेँ, मण्डलजीक भावनात्मकता सामाजिक यथार्थक संग गाढ़ सम्बन्ध अछि। हुनक रचनासभ लोकजीवनक पीड़ा आ संघर्षक साहित्यिक स्वरूप प्रस्तुत करैत अछि, जे मैथिली साहित्यक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानल जाइत अछि।

उपसंहारक रूपमे कहल जा सकैत अछि जे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक भाषाशिल्प आ शैलीगत प्रयोग मैथिली साहित्यक आधुनिक गद्य-परंपरामे एकटा ठोस मील का पत्थर मानल जा सकैए। मण्डलजीक लेखन महज कलात्मक सौंदर्यक साधन नहि, बल्कि समाजक वास्तविकता, किसान-मजदूरक संघर्ष, स्त्री-जीवनक पीड़ा आ ग्रामीण संस्कृति-सरोकारक प्रामाणिक दस्तावेज अछि। हिनकर शिल्प समाजक प्रत्यक्ष यथार्थक अनुभवकेँ साहित्यक धरातलपर उतरैत अछि, जे अकादमिक चिन्तनक विषय सेहो बनैत अछि आ सामान्य पाठकक हृदयक संवेदनाकेँ झकझोरैत सेहो अछि।

भाषाशिल्पक महत्व: मण्डलजीक भाषा-शिल्पक प्रमुख विशेषता ई अछि जे ओ ग्रामीण लोकभाषा, कहावत आ मुहावराक साहित्यिक रूपांतरण करैत छथि। 'मोड़पर' उपन्यासक "मोटका कलम" आ "महींका कलम" जकाँ कहावत वर्गीय विषमताक तीक्ष्ण उद्घाटन करैत अछि। "उढ़ड़ाकेँ गामक ठेकान" लोकानुभवक माध्यमसँ जीवनक अनिश्चितता आ असुरक्षाक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। एहि आधारपर स्पष्ट अछि जे मण्डलजीक भाषा केवल भाषिक सजावट नहि, अपितु सामाजिक यथार्थक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति थिक।

प्रतीकात्मकता आ लोक-बिंब: 'पंगु' उपन्यासमे सीतापुर गामक भौगोलिक वर्णन प्रतीकात्मक प्रयोगक उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करैत अछि। खेत, पोखरि, धार आ नदी मात्र दृश्य न रहि जाइत अछि, बल्कि समाजक धैर्य, सामूहिकता, असुरक्षा आ संघर्षक प्रतीक बनि जाइत अछि। 'चौमसिया धार' अल्पकालीन राहत आ सम्पन्नताक सूचक अछि, जखनकि 'छअमसुआ धार' दीर्घकालीन संघर्ष आ सहनशीलताक प्रतीक बनि जाइत अछि। एहि प्रकारक प्रतीकात्मक प्रयोग मण्डलजीक साहित्यकेँ बहुस्तरीय आ गहन सामाजिक चेतनाक वाहक बना दैत अछि।

व्यंग्यात्मक शब्दावलीक प्रभाव: 'रत्नाकर डकैत' जकाँ नाटकसभमे मण्डलजीक व्यंग्य सतही हास्यसँ हटिकऽ समाजक निरर्थक मूल्य, प्रशासनिक जटिलता आ पाखंडपर तीक्ष्ण चोट करैत अछि। व्यंग्यक सहज प्रयोग हास्य उत्पन्न करैत अछि, मुदा हँसीक भीतर समाजक गहींर विडम्बनाक उद्घाटन सेहो करैत अछि। ई शैली पाठककेँ हँसैत-हँसैत सोचए लेल बाध्य करैत अछि।

संवाद-शिल्पक सशक्तता: संवाद मण्डलजीक कथा-शिल्पक प्राणतत्त्व अछि। ओहि संवादसभमे पात्रक चरित्र, मनोविज्ञान आ सामाजिक स्थिति प्रत्यक्ष भऽ जाइत अछि। 'जिनगीक जीत' उपन्यासक पल्हनि आ अच्छेलालक वार्तालाप गरीबक विवशता आ श्रमक अनिवार्यताकेँ उद्घाटित करैत अछि। 'जीवन-मरण' उपन्यासक संवाद व्यक्तिगत इच्छा आ सामाजिक दायित्वक बीचक द्वंद्वक चित्रण करैत अछि। ई संवाद उपदेश नहि, बल्कि पात्रक सहज बोलीमे सामाजिक यथार्थक उद्घाटन अछि।

भावनात्मकता आ सामाजिक यथार्थवाद: मण्डलजीक भावात्मकता व्यक्तिगत आभासमे सीमित नहि रहैत अछि, बल्कि सामूहिक जीवनक अनुभवक प्रतिफलन बनि जाइत अछि। 'बहिन', 'बड़की बहिन' आ 'सुखाइत जीवनमे नब कलश' जकाँ कथासभमे स्त्री-जीवनक संघर्ष केवल पारिवारिक पीड़ा मात्र नहि, अपितु समाजक विडम्बनाक तीव्र प्रतीक सेहो अछि। एहि प्रकारक भावनात्मक प्रस्तुति मैथिली साहित्यक सामाजिक सरोकारक अमीट गवाही दैत अछि।

एतावता, जगदीश प्रसाद मण्डलक भाषाशिल्प आ शैलीगत प्रयोग मैथिली गद्य साहित्यक आधुनिक प्रवाहकेँ एहन दिशा देलक जे साहित्य समाजक आत्मचेतना आ सांस्कृतिक गूंजक दर्पण बनि उठल। ओ लोकभाषा, प्रतीक, व्यंग्य, संवाद आ भावनात्मकता सभक संयोजनद्वारा साहित्यक बहुआयामी रूप प्रस्तुत करैत छथि। हुनक लेखनक विशेषता ई अछि जे ई सामान्य पाठक लेल जीवनक यथार्थक सजीव अनुभव बनैत अछि, आ शोधक दृष्टिसँ गंभीर अकादमिक विमर्शक आधार सेहो।

निष्कर्षतः मण्डलजीक शिल्पक मूल स्वरूप समाजक संघर्षशीलता, पीड़ा आ चेतनाक सजीव गवाही अछि। हुनक रचनासभकेँ अध्ययन कएल जाए तँ ई साफ बुझाइत अछि जे ओ साहित्यकेँ महज मनोरंजनक साधन नहि, बल्कि सामाजिक प्रतिबद्धता आ सामूहिक चेतनाक मंच बना दैत छथि। एहि दृष्टिसँ मण्डलजीक योगदान मैथिली गद्यपरंपरामे आधार-स्तम्भक हैसियत रखैत अछि। भविष्यक शोध आ साहित्यिक विमर्शमे मण्डलजीक भाषाशिल्प एकटा प्रेरणास्रोत रहत, जे साहित्य आ समाजक परस्पर सम्बन्धक प्रमाणिक उद्घाटन करैत अछि। ❑

सन्दर्भ सकेत-

[i] मण्डल, जगदीश प्रसाद. मोड़पर (उपन्यास)। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, 2023, पृ. 11

[ii] तत्रैव, पृष्ठ संख्या: 103

[iii] मण्डल, जगदीश प्रसाद. पंगु (उपन्यास)। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, 2023, पृ. 9

[iv] मण्डल, जगदीश प्रसाद. रत्नाकर डकैत (नाटक)। पहिल संस्करण: 2013, तेसर संस्करण 2024। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृ. 27

[v] तत्रैव, पृष्ठ संख्या: 23

[vi] तत्रैव, पृष्ठ संख्या: 28

[vii] मण्डल, जगदीश प्रसाद. गामक जिनगी (कथा-संग्रह)। पहिल संस्करण: 2009; आठम संस्करण: 2024। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृ. 28

[viii] मण्डल, जगदीश प्रसाद. जिनगीक जीत (उपन्यास)। पहिल संस्करण: 2009; आठम संस्करण: 2024। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृ. 12

[ix] मण्डल, जगदीश प्रसाद. मिथिलाक बेटी (नाटक)। पहिल संस्करण: 2009; पुनर्मुद्रण: 2024। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृ. 14

[x] मण्डल, जगदीश प्रसाद. कल्याणी (एकांकी)। पहिल संस्करण: 2012; तेसर मुद्रण: 2023। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृ. 19

[xi] मण्डल, जगदीश प्रसाद. जिनगीक जीत (उपन्यास)। पहिल संस्करण: 2009; आठम संस्करण: 2024। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृ. 19

[xii] मण्डल, जगदीश प्रसाद. जीवन-मरण (उपन्यास)। पहिल संस्करण: 2010; साठम संस्करण: 2024। निर्मली: पल्लवी प्रकाशन, पृ. 29

[xiii] तत्रैव, पृष्ठ संख्या: 29